पूज्य साई जी का विशेष संदेश!!!

बदलो भारत बदलो दुनिया - नारायण सांई 'ओहम्मो'

आज एक अगस्त दो हजार सोलह | श्रावण कृष्ण पक्ष चतुर्दशी |विक्रम संवत2073| ब्रहममूहूर्त की पावन वेला ! अत्यंत शांति | एकांत और नीरसता के बीच प्रभात की वेला में आत्म - चिंतन - आत्मध्यान के पश्चात् 'सोऽम् शिवोऽम्' के साथ अजपा जप की सहज अवस्था में 'न किंचिदपि चिंतयेत्' की श्रेष्ठ अनुभूति में अलौकिक राज्य में स्वयं को प्रतिष्ठित देख रहा हूँ ! अब होश आया है कि शरीर जेल में है | मुझे तो कोई जेल बंधन में रख सके ऐसी परिस्थिति न कभी बनी है, न बनेगी ! जो मैं हूँ - वो कभी देश - काल - स्थान की सीमाओं में आबद्ध हो सकूँ - ऐसा हूँ ही नहीं ! 'मैं' नित्यमुक्त, निर्बन्ध, अविनाशी - ओहम्मो ! ओह मतलब आश्चर्य से परिपूर्ण ! ओंकार स्वरुप ! वही मैं हूँ ! वही हम है ! काश ! हम स्वयं को जान पाते तो कितना अच्छा ! लेकिन - धर्म के मायने बदलते जा रहे है - और धर्म के नाम पर जितनी संकीर्णता और उग्रता पनप चुकी है - वह तो धर्म के नाम पर मानें धब्बा है, कलंक है ! धर्म के नाम पर आक्रोश, हिंसा, टकराव, आतंक और अत्याचार अब बहुत हो चुके | अगर ये ही सब धर्म का पर्याय बन चुके हो तो हमें ऐसा धर्म नहीं चाहिए ! 'सर्वधर्मान् परित्यज्य' - सब धर्मो का परित्याग कर दो ! पिछले दिनों यही चिंतन चल रहा था - कि क्यों न मैं धर्म त्याग कर दूँ ?और सिर्फ मैं नहीं, सभी अपने अपने धर्म को छोड़ दें ! अध्यात्मवादी बनें ! धर्मो के दायरों में बहुत जी चुके ! अब ओजस्वी अध्यात्म के विहंगम आकाश की सैर करें ! ये मेरा धर्म - ये तुम्हारा धर्म ये इसका - ये उसका धर्म - आखिर कब तक हम लोग धर्म के नाम पर दीवारें खड़ी करते रहेंगे ? अब धर्म के नाम पर खड़ी की गई दीवारें या किले ध्वस्त होने चाहिए ! समय के साथ जो स्वयं में बदलाव नहीं करता - वह जड - पुराना - बासी हो जाता हैं | सारे धर्म पुराने हो चुके हैं | दुनिया को एक नए धर्म की जरुरत है या अब अध्यात्म चाहिए - या तो सब धर्मो को मानो - सब धर्मो की श्रेष्ठ बातों को स्वीकार करो - या फिर सब धर्मो को छोड़ दो - बस - दो ही रास्ते हैं | थियोसोफिकल सोसायटी इसी सिद्धांत पर बनी है | थियोसोफिकल सोसायटी के सिद्धांतों को भी समझने जैसा है | मैं सविनय आग्रह करता हूँ संसार के समस्त धर्मो के धर्मगुरुओं से कि

थियोसोफिकल सोसायटी के सिद्धांतों को समझने का प्रयास करें ! समय निकालकर जे. कृष्णमूर्ति को पढ़ें ! मैंने चेन्नई में थियोसोफिकल सोसायटी के मुख्यालय अडनार या अडियार में मेरे एक आत्मीय दिल्ली निवासी मित्र को भेजा था वे वहाँ गए थे और कुछ लिटरेचर ले आए थे ! अब समय आया है कि हम धर्मो के सार तत्व को समझें और ओजस्वी अध्यात्म की ऊँचाई पर पहुँचे ! मैं एक पुस्तक लिख रहा हूँ - जिसका नाम रखा है 'ओजस्वी अध्यात्म |' बहुत कुछ लिख चुका हूँ - थोड़े समय में लेखन पूर्ण होगा - आप इंतजार कीजिए और भूलियेगा नहीं - जरुर एक बार तो अवश्य पढ़ियेगा ! मुझे पूर्ण उम्मीद है कि आपको नया प्रकाश मिलेगा !

गुरूपूर्णिमा बीत चुकी | देश - विदेश के साधक - भक्तों ने गुरूपूर्णिमा पर्व पर गुरूपूजन किया होगा ! गुरूपूर्णिमा पर लाखों - करोड़ों साधक भक्तों में गुरू स्मरण किया होगा | परन्तु अब इतने से नहीं चलेगा | गुरू की महानता को केवल देखना - या समझना ही नहीं अपितु उस महानता तक पहुँचना भी है ! और यही जीवन का लक्ष्य होना चहिये !

कल याने दो अगस्त को भौमवती अमावस्या है और साथ में पुष्य नक्षत्र भी है | लोग अक्सर पुष्य नक्षत्र में सोना - चांदी खरीदते हैं परन्तु इससे अधिक महिमा दान - पुण्य की है | मेरे पास लोक सेवा ट्रस्ट का ब्रोशर आया है जिसमें सेवा कार्यो, दैवीकार्यो को दर्शाया गया है - ये अच्छी बात है - क्योंकि देखा देखी पुण्य बढ़े ! और www.nslstrust.org की वेबसाइट भी हाल ही में प्रारंभ होने जा रही है - दो - तीन दिन पहले ऐसी जानकारी मिली |

मंगलवार (२ अगस्त २०१६) को पुष्य नक्षत्र में आने वाली अमावस्या - प्रभावशाली है - कर्ज मुक्ति के लिए ये संयोग विशेष लाभदायी है | इस दिन आंशिक भुगतान भी किया गया तो आय के साधन बढ़ेंगे और व्यक्ति कर्ज से जल्दी मुक्त होगा ऐसा ज्योतिषविदों का मंतव्य है! मैं एक सूत्र दे रहा हूँ - 'स्वयं को बदलो, देश को बदलो, दुनिया को बदलो दुनिया और देश को बदलने के लिए शुरुआत हम स्वयं से करें | आजकल ऐसा देखा जा रहा है कि लोगों की दिनचर्या का अधिकांश हिस्सा परनिंदा और परदोषदर्शन में बीत जाता है | निंदामुक्त चिंतन और व्यवहार हमारी जीवन शैली में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है | कभी लगता है कि टी.वी. पर चलने वाली डिबेट, बहस - वातावरण को ज्यादा अशांत बना रही है | एक तरफ हैप्पीनेस मंत्रालय बन गया है मध्यप्रदेश में - और भारत में भी हैप्पीनेस बढ़े ऐसे प्रयास हो रहे हैं परन्तु छोटे - छोटे कई कारण मनुष्य के जीवन को दु:खी, अशांत बना रहे है | आत्महत्याएं बढ़ रही हैं | तनाव बढ़ रहा है | एक - दूसरे पर आरोप - प्रत्यारोप, परदोषदर्शन, परनिंदा से शक्ति की बरबादी हो रही है | क्या ये समय हम किसी रचनात्मक कार्य में नहीं लगा सकते ? दूसरों की बुराई करके और दूसरों की बुराई देखकर हम अपनेमन मस्तिष्क को कब तक कचरा पात्र बनाये रखेंगे ? इसीलिए अब स्वयं को बदलें - फिर देश

को और दुनिया को बदलें !ये संभव है - चलो आज और

अभी से प्रयास करना शुरू करें |

एक दिगंबर मस्त फकीर का चित्र देखा मैंने दो दिन पहले अखबार में ! ८ महीने से सूरत के महुआ तहसील के खारवाल गाँव के गणेश मौहल्ले में एक जटाधारी - अवधूत बाबा - मस्त फकीर एक वृक्ष के नीचे अपनी आत्मानंद की मस्ती में मस्त है | न उसे बिछाने को कुछ चाहिए न ओढ़ने को ! दिशाएँ ही वस्त्र है, भूमि ही बिछौना है और आसमां ही जिसकी चादर या कम्बल है |

गाँव वाले भूखा रहने नहीं देंगे और इसके लिए वो कुछ भी लेने को तैयार ही नहीं | चेहरे पर अलौकिक प्रसन्नता - खुशी - और मस्ती को देखकर लगता है कि दुनिया का सबसे खुश यही है | त्याग और विरक्ति से छलकता हुआ ये व्यक्तित्व मुझे प्रभावित कर रहा है | गुजरात समाचार सूरत संस्करण दि. २८/७/२०१६ पेज नं. - २ पर प्रकाशित चित्र में बाबाजी के चेहरे की प्रसन्नता और निश्चिंतता करोड़पतियों - अरबोपतियों के भाग्य में कहाँ ? शायद इंटरनेट पर आप सर्च करें तो लिंक है - (www.gujaratsamachar.com surat खुल जाए तो बाबाजी के दर्शन करना !

"अत्रतत्रसर्वत्र आनंद ही आनंद है | "

स्वयं आनंद में रहें, समाज को आनंद में रखें, देश - दुनिया को आनंद की जरुरत है |

और अब, महाभारत के शांति पर्व के १२४/६९ श्लोक के साथ इस लेख की पूर्णाहुति -

"यद्यप्यशीला नृपत
प्राप्तुवन्तिश्रियं क्वचित् |
न भुजते चिरं तात
समूलाश्च न सन्ति ते ||"

राजन ! यद्यपि शीलहीन मनुष्य भी राजलक्ष्मी प्राप्त कर लेते हैं तथापि वे चिरकाल तक उसका उपभोग नहीं कर पाते और मूल सहित नष्ट हो जाते हैं |

• वेदव्यास

भाजपा के नरेन्द्र मोदी को इस पर चिंतन करने जैसा है | पर उनको कौन कहे ? कौन समझाये ? अगर आप पाठकों में से कोई समझा सके तो अच्छा !आरएएस के, भाजपा के नेताओं को बापूजी के पास

जाने का समय नहीं है |

संतों की अवहेलना, तिरस्कार करते हुए कोई भी पार्टी लंबे समय तक भारत पर राज नहीं कर सकती ! यह नग्न सत्य है - यह निंदा नहीं, सच्चाई है |